

सिर्फ जानने तक ही नहीं, रूपांतरण भी

उपनिषद में उल्लेख आता है कि सद्गुरु और शिष्य के बीच शून्य में संवाद हुआ। आँखों-आँखों में बात हो गई है। हृदय ने हृदय पर गीत गाया है। ना तो गुरु ने कुछ कहा है और ना शिष्य ने कुछ सुना है। फिर भी गुरु ने सब कह दिया और शिष्य ने सब सुन लिया। गुरु के साथ तीन प्रकार के सम्बन्ध हो सकते हैं। विद्यार्थी का सम्बन्ध, तब गुरु केवल शिक्षक होता है। यहां वाणी आवश्यक है। संवाद जरूरी है, क्योंकि बात बुद्धि से बुद्धि तक होगी। वह सबसे ऊपरी नाता है। विद्यार्थी जिज्ञासु है, लेकिन मुमुक्षु नहीं। जानना चाहता है, होना नहीं। होने के लिए तो, न होने की तैयारी चाहिए। जानने में कुछ कीमत चुकानी नहीं पड़ती, लेकिन जानकारी इकट्ठी करके और भी अहंकार को रस आता है। जैसे जैसे जानकारी बढ़ती है, वैसे वैसे अहंकार और परिपुष्ट होता है। तब तो कहते हैं, अज्ञान थोड़ा ही भटकाता है, ज्ञान बहुत भटकाता है। अज्ञान ले जाता है अंधकार में, ज्ञान ले जाता है महाअंधकार में। दूसरा नाता है, गुरु और शिष्य के बीच शिश्त्व का। विद्यार्थी अब केवल पूछने में ही उत्सुक नहीं है, प्रश्न ही नहीं है, अब विद्यार्थी स्वयं प्रश्न बन गया है। अब जानकारी इकट्ठी नहीं करनी, लेकिन जानना है। जो भी कीमत चुकानी पड़े, चुकाने की तैयारी है। जानने में मिट भी जाना पड़े, तो भी पैर पीछे नहीं लौटेंगे। इतने साहस से ही विद्यार्थी का रूपांतरण शिष्य में होता है। इसलिए नानक ने अपने सत्संगियों को सिखव कहा। वो पंजाबी रूपांतरण है शिष्य का।



- ब. कु. गंगाधर

शिष्य के साथ ही धर्म की शुरुआत है, अर्थात् शिष्य के साथ धारणा जुड़ी हुई है। विद्यार्थी दर्शन के जंगल में भटकता, शब्दों के जाल में अटकता। शिष्य सुलझने लगता, राह पाने लगता है। राह प्रेम की है, भटकाव तर्क का है। उलझाव बुद्धि का है, तो सुलझाव हृदय का है। जब ऊर्जा बुद्धि से हृदय में प्रवेश करती है, तो विद्यार्थी रूपांतरित होता है। उसके भीतर आत्मक्रान्ति घटित होती है, वह शिष्य होता है। शिष्य और सद्गुरु के बीच पहली बार कुछ सार्थक जन्म पाता है। उसके पहले तो बातचीत ही बातचीत थी। उसके पहले तो संभाषण था, अब कुछ गहराई में उतरना होगा। अब चलें उस प्रगाढ़ता की तरफ। जैसे नमक का पुतला सागर में डुबकी मारे, गहराई का पता लगाने को, तो गहराई खोजते खोजते खुद भी खो जाये। गहराई तो मिले, लेकिन खुद ना बचे। शिष्य करीब सरकने लगा गुरु के। कुछ कुछ दूर जैसे कोयल बोले, ऐसे गुरु के बीच में जो खाली जगह है, वह सुनेगा। वह जो विराम है, वह जो विश्राम है, ज्यादा महत्वपूर्ण हो उठेगा। शब्द उसको उभारने के काम में आयेंगे। शब्द उसे पृष्ठभूमि देंगे। अभी शब्दों की जरूरत रहेगी, लेकिन बड़ी बदली हुई जरूरत।

विद्यार्थी सिर्फ शब्द को सुनता था, लकीरों को पढ़ता था। शिष्य शब्द के बीच में जो शून्य है, उसे गुनता है। पंक्तियों के बीच में जो रिक्त स्थान है, उसे सुनता है। गुरु क्या कहता है, यह कम महत्वपूर्ण है, गुरु क्या है, ये ज्यादा महत्वपूर्ण होने लगता है। यह नाता प्रेम का है। यह मामला तर्क, समझ, गणित से पार गया। इसलिए विद्यार्थी तो दुनिया में सब जगह हुए हैं, लेकिन शिष्य कभी कभी हुए। किसी जीसस के पास, किसी बुद्ध के पास, किसी नानक के पास, किसी कबीर के पास। शिष्य कभी कभी हुए हैं। शिष्य होने के लिए अहंकार को छोड़ने का साहस चाहिए। क्योंकि जब तक अहंकार है तब तक प्रेम नहीं। और तीसरा जो सम्बन्ध है उसे गुरु और शिष्य के बीच सम्बन्ध भी कैसे कहें! क्योंकि जहाँ दो ना बचे, वहाँ कैसा सम्बन्ध! मगर वही परम सम्बन्ध है। विद्यार्थी से जो यात्रा शुरू हुई थी, वह उसी परम सम्बन्ध पर जाकर समाप्त होती है। शिष्य का तो पड़ाव है, इसलिए तीसरा जो रूप है, उसे सद्गुरु के समान कहेंगे। भक्ति मार्ग में उसे भक्त कहते हैं। विद्यार्थी बाहर बाहर परिधि पर, भक्त केन्द्र पर, दोनों के मध्य में शिष्य। शिष्य को शब्दों की जरूरत होती है : विद्यार्थियों को सिर्फ शब्दों की जरूरत होती है : शिष्य को शब्दों की और शब्दों के साथ शून्य की जरूरत होती है। सद्गुरु के समान अवस्था हो जाती, तो शब्दों की कोई जरूरत नहीं रह जाती। शून्य पर्याप्त है। माना, आत्म स्वरूप की स्थिति में स्थिरियम होता है।

प्रारंभ होता है शिष्य के साथ और पूर्ण होता है समानता के साथ। बुद्धि विद्यार्थी बनाती है, हृदय शिष्य बनाता है और हृदय से भी गहरा जो आपके प्राणों का प्राण है, आपकी आत्मा है, वह सद्गुरु समान बनाती है। तो क्या हम अपने आप को कहीं खड़े हैं, ये देख सकते हैं ना! विद्यार्थी ही बने पड़े हैं या शिष्य या शिष्य की तरह होने के लिए आगे बढ़ें हैं या जो होना था उसके करीब पहुंचें हैं? हमने अपने आपको मिटाया है? अपने वजूद को आगे बढ़ाया है? या यूँ ही गफलत में जी रहे हैं? तो सद्गुरु के हृदय के गीत हृदय से गा रहे हैं या और कुछ हो रहा है? अपने आप को कितना मिटाया है और कितना प्रबुद्ध किया है? जहाँ सम्बन्ध ही समाप्त होकर समानता के श्रेणी में पहुंच जायें।

अपनी रक्षा करनी है तो किसी का कोई भी अवगुण चित पर न रखो

तीन बारी ओम शांति बोलना, यह मेरा महान मन्त्र है। पहला ओम शांति आत्मा को लाइट बना देता, जो मैं यहाँ आपके सामने हाजिर हूँ, दूसरा किसकी माइट से? बाबा की माइट से। तीसरा ओम शांति आपका प्यार, परिवार के प्यार की भी कमाल है। हमारे परिवार का इतना प्यार है, तो बाबा का भी कितना प्यार मिला है। अभी मैं अपने परिवार को एक बात कहना चाहती हूँ कि कभी किसी के प्रति ज़रा भी ग्लानि की बात न सुनना, न सोचना यह अपने आपसे प्रॉमिस करो। मैं तो ज़रा सी भी नहीं सुनती, ना ही कभी कुछ सोचती हूँ, तभी जिंदा हूँ। नाटक माना ना अटक, बात जो हुई सो ड्रामा। साइंस और साइलेंस का कितना बड़ा कनेक्शन है, यह मुझे देखने और अच्छी तरह से जानने को प्रैक्टिकल में मिला। साइंस विनाशकाल ले आ रही है और साइंस ही स्थापना के कार्य में भी मदद करती है। हम लोगों के सामने जो भी बातें आ रही हैं उनको पार करने में भी साइंस अच्छी मदद कर रही है। तो मैं आप सबको अच्छी तरह दिल से कहती हूँ - एक तो बीती बात कोई की कभी भी चिंतन नहीं करना। जो बित गया वह ठीक है, ड्रामा में था। बाबा ड्रामा की नॉलेज को कितना महत्व देता है। ड्रामा की नॉलेज कितनी गहरी है। हरेक का पार्ट अपना-अपना है। एक का पार्ट



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

न मिले दूसरे से, फिर चिंतन करने से फायदा क्या? फिर भी बाबा का परिवार है, सच्चा प्यार बाबा अभी साकार से अव्यक्त होकर भी दे रहा है। मुरली में बाबा ने कहा बीज में झाड़ समाया हुआ है, बीज से ही झाड़ निकलता है। अन्त में अगर बीज नहीं निकले तो फिर झाड़ कैसे निकलेगा। तो बीज झाड़ का ज्ञान है, ड्रामा का ज्ञान है? आखिर वह भी विज्ञान का ज्ञान है। जैसे दूसरों की सेवा का ध्यान रहता ऐसे स्व-स्थिति का भी ध्यान रहे। कोई भी परिस्थिति आये, स्थिति नीचे-ऊपर न हो। हमारी स्व स्थिति इतनी ऊँची हो जो बस, रक्षक बाबा है, रक्षा

अपनी करनी है। एक बाबा ही शिक्षक भी है तो रक्षक भी है। कदम-कदम पर शिक्षा है, रक्षा भी करता है, परन्तु हम रक्षा

अपनी तब करें जो कोई का अवगुण चित पर न धरें। तो मन शांत, तन है शीतल, ऐसी दुनिया बनानी है।



दादी हृदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

आत्मिक स्मृति सदा इमर्ज रहे, इस पर अन्डरलाइन कर अटेंशन दो

अभी हम सबको यही दृढ़ लक्ष्य रखना है कि सदा ही स्वमानधारी रहें। स्वमान याद भी रहता है, ऐसे नहीं भूल जाते हैं लेकिन एक होता है सिर्फ ध्यान में रहना - हम यह हैं। एक होता है जैसे कोई जज है, वो घर में भी जायेगा तो उसको यह याद

में कारोबार की भी स्मृति थोड़ी मिक्स हो जाती है। कहाँ ज्यादा, कहाँ कम होती है तो वो मिक्स होने से वो नशा थोड़ा कम होता है। अगर हम सब मिल करके संकल्प लें कि बाबा जो कहता है, जो देखना चाहता है, वह हम करके दिखायेंगे तो समानता और सम्पन्नता सहज आ जायेगी और हम सबसे बाबा प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगा। क्योंकि जब तक बच्चों की यह स्थिति अपने अन्दर प्रत्यक्ष नहीं है तो बाप कैसे प्रत्यक्ष होगा? तो बाबा ने हम लोगों को यह भट्टी का जो चांस दिया है इससे अटेन्शन को और अण्डरलाइन लग जाती है। तो इस बारी हम कुछ ऐसा करें जो बाबा हमको सर्टीफिकेट देवे कि परिवर्तन मैंने देखा। बाबा ने जो हमको संकल्प दिया कि मैं रिजल्ट देखना चाहता हूँ, सिर्फ फाइल में प्रतिज्ञा के पत्र एड नहीं करना चाहता हूँ, प्रत्यक्ष सम्पन्न और सम्पूर्ण मूर्ति देखना चाहता हूँ। तो चलो हम फुल 100 नहीं लेकिन कुछ तो कदम बढ़ायें ना। जो बाबा कहे अच्छा चलो 50 है, 60, 70 तक तो आवे, कुछ तो परिवर्तन बाबा देखे...।

है ना मैं जज हूँ, लेकिन जब जज कुर्सी पर बैठता है तो वो नशा एक और होता है। तो इसी रीति से हम साधारण स्मृति में तो रहते हैं क्योंकि बाबा ने भी तीन शब्द बोले व्यर्थ, नेगेटिव और साधारण संकल्प। तो साधारण रीति से तो हम सब ब्राह्मण पवित्र जीवन वाले हैं, यह तो याद रहती ही होगी लेकिन उस नशे में रहना वो तब होगा जब हमारी स्मृति की सीट ठीक होगी, यानि स्मृति सदा इमर्ज होगी। आत्मिक स्मृति में रहकर हर कर्म करें। तो अभी हम लोगों को यह बीच-बीच में अण्डरलाइन करनी चाहिए कि स्मृति इमर्ज रूप में है? क्योंकि कारोबार तो चलानी पड़ती है, कारोबार

दृढ़ता का संकल्प लेके कुछ न कुछ परिवर्तन अपने में जरूर करें। वास्तव में परिवर्तन का लक्ष्य तो ऊँचा ही होना चाहिए। लेकिन हम फिर भी परिवर्तन शुरू करेंगे तो हो ही जायेगा।

अन्तर्मुख बनो तब बाबा की आकर्षण में अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी

योग की तपस्या से ही विश्व को शांति का दान मिलता है लेकिन इसके लिए मन और मुख का मौन जरूरी है। सेकण्ड में इस देह की स्मृति से परे जाने का अभ्यास चाहिए। हम राजयोगियों को अपने इस योग का अनुभव है। निराकारी दुनिया तो परमधाम है लेकिन अव्यक्त वतन, सूक्ष्म वतन यह हमारे संगम की विशेषता है। उसका हरेक को अनुभव चाहिए, जहाँ से बाबा हमें मिलने आते हैं। तो इसके लिए जितनी-जितनी बुद्धि शुद्ध बनेगी, बाहर की बातों से अन्तर्मुख



दादी प्रकाशमणि, पूर्व मुख्य प्रशासिका

होगी, उतनी ही बाबा की आकर्षण रहेगी। सचमुच में हमें भगवान की आकर्षण हो रही है - यह अनुभव चाहिए। जैसे कई बार बाबा कहते कि बांधेलियों को बाबा से मिलने की आकर्षण होती है कि कहीं छुट्टी मिले तो हम बाबा से, भगवान से मिलने के लिए भागें। जैसे दुःख में सिमरण सब करे... वैसे बांधेलियों पर बन्धन है तो वह

जास्ती याद करती हैं। आप लोग छुटेले हैं तो मस्त रहते हैं। यह भले अच्छा है लेकिन लगन एक अलग चीज है। वह ऐसी लगन होती जो रात को नींद भी उड़ जाती और मन कहता बाबा के पास जाके बाबा से रूहरिहान करते रहें। कैसे बाबा लाइट के वतन में हमें लाइट रूप में ले जाता। खुद भी लाइट रूप बन जाओ तो बाबा लाइट

लगन ऐसी हो जो रात की नींद भी उड़ जाये। रूहानी यात्रा की रूचि रख बाबा से मिलन की अनुभूति करते रहना है। अगर इसकी रूचि कम है तो बाबा के मिलन का सुख अनुभव नहीं होगा। जैसे सेवाओं में रूचि रखते तो सेवा के साथ-साथ मेवा भी खाते रहते। इससे कितनी आत्माओं का कल्याण

होता - यह अनुभव करते रहते हो! सदा बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो तो रक्षक बाबा सदा रक्षा करेगा। बाबा कहता बच्चे, तुम मेरी नज़रों में छिप जाओ। तो हम बाबा के नयनों के नूर हैं। इससे बड़ा भाग्य और क्या चाहिए! है कोई दुनिया में जो कहे कि हम भगवान के नयनों के नूर हैं। बाकी तो दुनिया के खेल हैं, चाहे बीमारी है, आना है-जाना है, सर्विस करो उसमें आंधी भी आती, तूफान भी आते - यह वह सब होता परन्तु अपनी स्थिति स्थिर चाहिए। कोई कितना भी मन खराब करे, संग में कभी नहीं आना। संगदोष बुद्धि को बदल देता है। सबसे प्यार करें सब फ्रेंड्स हैं, पर्सनल फ्रेंड किसको नहीं बनाओ। आपस में चाहे तीन हो या पाँच हो लेकिन रहना चाहिए सभी को मिलकर। तुम भी खुश रहो, तुमसे भी सब खुश रहें। हर स्थान पर खुशनसीबी का वातावरण हो। किसके भी चेहरे से उदासी, घृणा, नफरत यह फील नहीं हो तब तो मज़ा है। फिर भी अगर कोई 19-20 बात हो तो आप लोग अपनी तपस्या से उसको मिटाओ। हमारी रूहानी आकर्षण भी एक तपस्या है जो सबको सकाश देगी।